मुनि मेरु रचित नव गीतिकाओ

- उपा. भुवनचन्द्र

माण्डल-पार्श्वचन्द्रगच्छजैनसंघना ज्ञानभण्डारना एक प्रकीर्ण पत्रमांथी मळेला नव गीतो यथामति संकलित करीने विद्वानो समक्ष मूकी रह्यो छुं. कर्ताए पोते जणाव्युं छे : जिनभद्रसूरिनी पाटे श्रीजिनचन्द्रसूरिनां दर्शन कर्यां. लिपिकारे जणाव्युं छे तेम मुनि मेरु कमलसंयम उपाध्यायना शिष्य हता.

गीतो भाववाही छे अने शास्त्रीय रागोमां निबद्ध छे. गीतोनी भाषा ध्यान खेंचे छे.

'संगतू', 'गमिले' जेवा शब्दो मराठीनुं स्मरण करावे छे. 'दुइ', 'करिवो' 'जाइवो' वगेरे शब्दो बंगाळीना सूचक छे. 'इम' 'इणि', 'एह' जेवा शब्दो मारुगूर्जर भाषाना छे. 'जिणह' जेवो अपभ्रंश प्रयोग पण आमां छे. 'वदति' एवो शुद्ध संस्कृत शब्द पण जोवा मळे छे. 'नेकु' (नेक) ए- ऊर्दू-अरेबिक शब्द पण अत्रे हाजर छे. रचयिता विविध देशोमां विचरनार एक मुनि छे माटे आम थयुं छे के आवी भाषा कोई प्रदेशमां बोलाती हती - ए विशे तज्ज्ञो ज प्रकाश पाडी शके.

'पहिरि दाखिणु चीरु' (गी. ४) - दक्षिणी चीर अर्थात् वस्त्रनो उल्लेख हशे ? जो एम होय तो मराठी साथे सीधो सम्बन्ध स्थापित थाय. गीत ८ मांनो शब्द 'मुनागरू' तपास मागे छे.

मुनि मेरु विशे माहिती प्राप्त थई नथी. कमलसंयम उपाध्यायनी रचनाओ नोंधाई छे.

बंगाळी के मराठीना प्राचीन रूपना नमूना समान आ रचनाओ भाषा रसिकोने रसप्रद जणाशे एवी आशा छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१

॥ गउड श्रीराग ॥

अंधकारु गमिले प्रगट प्रगासे, इणि कारणि दोषाकरु जले पतित पलासे ॥१॥
भमरा रंगु कियले कमल निवासे सुकरम दिनकर किरणि नियतु वगासे ॥द्रू०॥
सुगुरु वचन रसो निज मनि आणी, मुनि मेरु समरइ जिनु परमारथु जाणी
॥ २ भमरा० इति गीतं ॥

२

पूनिमरजनीकरु उपमा लावइ रमणी वदन कहं जनु रहसइ ।
धिगु लाला मल कफ जल पूरित अधम उतिम मानइ मोहवसे ॥१॥

भमियउ भमियउ जीवा एणि परे, चिन्तामणि बुधि काच गहिउ करे ।द्रू०।

सिव पुरि चालतं मारगि वटपाडउ, मनसिज बाणिहि निघिण हणइ ।
एम न विंदति मानव हरखति, तरुणी नयनपेखि मूरख पणइ ॥भमि० ॥२॥

अधर अधरगति संगति दायकु, परम पदिहिं जातु जीउ धरइ ।
वटफल जिम एह बाहिरि मनोहरु, अंतरंगु विचारतु चितु न हरइ ॥भूमि० ॥३॥

कुचयुग अमृतकलस जिम सोइह, इणि भ्रमि भूलउ म संसार सरे ।
धरम वाहन पंथि ए दुइ परवत, पार चाहसि तउ यतन करे ॥भूमि० ॥४॥

दुरगंध असुचि लजा ऊपजावइ, तउवि तरुणी अंग जीउ सरइ ।
करम वाहितु न जपइ परमेसरु, सुरसरि छोडि पंकि न्हाणु करइ ॥भूमि०॥५॥

त्रिभुवनपति जिनचरण प्रसादिं, भ्रम भंजिवि परबोधु लहइ ।
कमलसंजम उवझाय पद पंकज एकचितु मुनि मेरु एम कहइ ॥भूमि०॥६॥

॥ इति धनाश्रयिरागेणस्त्रीविरक्तिकारणगीतं ॥

३

॥ श्री राग ॥

सकल मंगल कारणू रे, आरे वीतराग मइ भेटिउ युगादि देउ ॥१॥
भावइ रे भावइ जिणिंदू रे, आरे आदिनाथ पदि मनु लागिनला ॥द्रू०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुनि मेरु संगइ संगतूरे, आरे जिन जिन जापि पइयइ आनंदु ॥२ भावइ० ॥

आदिनाथगीतं ॥

४

॥ श्री राग ॥

पहिरि दाखिणु चीरु चंदणु लावइ सरीरु, सकल सिंगारु करइ ।
गजपति गति चालइ बोलइ चतुरपणि, कहु किसु मनु न हरइ ॥१॥
आ रे आजु काइ करिवो, सखी रे जिणह भुवनि जाइवो ॥ध्रू०॥
मुनिमेरु वदति वदन निरखियले परमाणंद भयो ।
जीराउलि प्रभु नवल निनार्दि **पारसनाथ** जयो ॥२॥ रे आ आजु०

॥ **इति जीराउलापार्श्वनाथगीतं ॥**

५

[रागः] ॥ नाट ॥

सखी रे रहसु जले कवलु आजु तुझ चिति, अवरु न चाहइ रंगु ॥१॥
मोरा मनु लागिला, देखिनला पारसनाथ ॥ध्रू०॥
जयउ सु सोहागिलु अससेणर(रा)यां तनि, संगति यति **मुनिमेरु** ॥२॥
मोरा मनु लागिला, देखिनला पारसनाथ ॥ध्रू०॥

॥ **पार्श्वनाथ गीतं ॥**

६

[रागः] **केदारा**

पसुय देखि नेमि रथ वालिलइ टालिलइ पातगु कलिमलो ।
राजल काजल पूरित मुख देखी सखी रे वचन कहिलो ॥१॥
कवणु मति एहु लियली, किहां चातुरी नेह गहिली ॥ध्रू०॥
अपुचे रंगि रंगु सखी रे न कीजइ परचि रंगि रंगु भलो ।
वीतरागु नेमिनाथ न करइ नेहु, आपुचा तइ मनु लाइलो ॥ कवणु० ॥
रहु सखि पतंग रंगु न धरीजइ, मोरउ रंगु मंजीठ जिसो ।
अविचल सम्बन्धु नेमिराजीमती जले थिरु रंगु इसो ॥ कवणु० ॥

॥ **इति नेमिनाथ गीतं ॥**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७

[रागः] ॥ धनाश्रयी ॥

हितुअहितु विवेक विचारिलइ मनुरी गिलइ अजित जिण पाइ ॥१॥
परम लखु पाया रे, ऊपजेले अति आनंद ॥ध्रू०॥
देवी विजयानंदनु जिनु जयउ, मुनि मेरु कहइ सरस सभाउ ॥२॥
परम लखु पाया रे, ऊपजेले अति आनंद ॥ध्रू०॥

॥ अजितजिनेश्वरगीतं ॥

८

(राग) ॥ पूर्वी मलार ॥

अम्हचि सरीरि सो गुण नही, रीजवीजइ जिणि प्रभुचीत मुनागरु रूवडउ मनि रे,
आरे कासी पुरपति जिननाथ ॥ध्रू०॥
मेरु कहइ इकु अंतरंगु नेकु हइ, इतनइ जो होइ सु होउ । २ मुनागरू० ॥

इति बाणारसीपार्श्वनाथगीतं ॥

९

॥ कुमोदवइराडी ॥

चेतनारूपु आतमा विचारि विमोहि न मोहियला ॥१
सु तनु मनु रहसिला रे आणंदू पाइला ॥ध्रू०॥
मेरु भणइ जिनभद्र सूरि पाटि जिनचंद्र सूरि देखिला ॥ २ सुतनुमनु०॥
इति जिनचंद्रसूरि गीतं ॥

एतानि गीतानि श्रीकमलसंयमोपाध्यायविनीतविनेयमुनिमेरुमुनिना कृतानि ॥
भद्रं॥छा॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org